SARDAR PATEL UNIVERSITY
CHAIKAKA
LIBRARY
VALLABH VIDYANAGAR

4.5 कहानी :-

4.5.1 सलाम :-

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित लेखन में अपनी यह पहचान अपने रचनात्मक लेखन के जरिए ही नहीं बनाई, जिसमें उनकी आत्मकथा, उनकी कहानियाँ और उनकी कविताएँ शामिल हैं, अपने विचारात्मक लेखन के जरिए भी बनाई है जिसमें उनकी दलित लेखन को लेकर हुए दूसरे लेखकों से विमर्श की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इस विमर्श में उनकी हिस्सेदारी का वैशिष्ट्य इस बात में है कि विचार की अपनी जमीन पर मजबूती के साथ खड़े रहकर भी उनमें प्रतिपक्ष के विचारों को सुनने और तर्क की जमीन पर उचित को स्वीकार करने का माद्दा भी है। वे प्रतिपक्ष से संवाद करते हैं, वितंडा नहीं। वस्तुतः संवाद की सही जमीन भी यही है।

वे कहानियाँ दलित जीवन संदर्भों से जुड़ी कहानियाँ हैं जिनमें दलित जीवन के सुखः दुख, कष्ट-क्लेश, उपेक्षाएँ-प्रताडनाएँ, कुंठा-घुटन तथा कुछ सपने तथा उनके लिए किए जाने वाले संघर्ष को उजागर किया गया है। यह सब सदियों से दलित जीवन का यथार्थ रहा है जिसे ओमप्रकाश वाल्मीकि ने निहायत संजींदगी से यथार्थ के प्रति प्रायः वस्तुनिष्ठ रहते हुए कहानी के रचना-विधान की संगति में दृष्टिकोण के समूचे खुलेपन के साथ चित्रित और रूपायित किया है। वे शक्तियों और वे चेहरे भी इस क्रम में बेनकाब हुए हैं। दलित जीवन की इस समूची यातना के जो स्रोत और निर्मित रहे हैं। ये बड़ी साफ-सुथरी, किन्तु बेहद बेधक और मार्मिक कहानियाँ हैं। ऐसे अनेक पात्र भी इन कहानियों में आए हैं जो दलित न होते हुए भी दलितों के संघर्ष में उनके साथ हैं। दृष्टि के इस खुलेपन ने कहानियों को यथार्थ की विश्वसनीयता

Scanned with CamScanner

तो दी ही है, एक मानवीय जीवन के लिए दलितों का यह संघर्ष सफल हो,संघर्ष की सही जमीन और मानसिकता के लिए भी सही पेशकश की है। जैसा हमने कहा है, ओमप्रकाश वाल्मीकि भले अपने को दलित लेखन के दायरे में रखें, उनकी कहानियों में उनकी रचना सामर्थ्य और उनकी सोच के जो पहलू उभरे हैं वे उन्हें हिन्दी की यथार्थवादी कहानी-परंपरा के दायरे के एक क्षमतावान लेखक के रूप में हमसे मुखातिब करते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों का संग्रह 'सलाम' अपने कथ्य और शिल्प के कारण तो हमारा ध्यान खींचता ही है, अपने सरोकारों के कारण भी हमें दिल दहला देने वाली स्थितियों से गुजरने को मजबूर करता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के पात्र किसी उच्च वर्ग या मध्यम वर्ण के पात्र नहीं हैं जो समय बिताने के लिए प्रेम में आहें भरते या क्लबों में डांस करते दिखाई देते हैं। जिंदगी की मदहोशियों के अलावा जो जीवन है, जो सिर्फ जी ने की जद्दोजहद में ही कट जाता है, उसी का सच्चा चिट्ठा है - सलाम की कहानियाँ। इनमें है समाज की त्रासद स्थितियों के कारण अपमान झेलते स्त्री-पुरूष, जमाने की गंदगी साफ करती औरतें। अपने चीत्कार और सिसकियों को चुपचाप पीकर शोषक दुनिया को बदलने का सपना देखने वाले लोग जो लड़ते जरूर हैं पर जीत नहीं पाते। लेकिन इन कहानियों में उस सपने को जिन्दा रखने का वह जज्बा भी दिखता है कि ये इस युद्ध को जीतेंगे जरूर, चाहे उसमें समय कितना भी लग जाए। इसी आशा और विश्वास की कहानियां हैं- 'सलाम' में।

'सलाम' का नायक हरीश, भंगी समाज से संबंधित है। पूरी कहानी का ताना-बाना हरीश के विवाह के चारों तरफ बुना गया है। हरीश का एक मित्र कमल उपाध्याय है,जो उसकी बारात में ही शामिल नहीं होता, बल्कि

Scanned with CamScanner

उसके विवाह की तैयारियों में भी घर-परिवार के सदस्य की तरह लगा रहता है। हरीश की बारात देहरादून से मुजफ्फरपुर नगर के पास के एक गाँव में पहुँचती है। अगले दिन सुबह कमल को चाय की तलब लगती है और वह ढूँढ़ते हुए गाँव की एक चाय की दुकान पर पहुँचता है। दुकानवाला यह जानकर कि यह देहरादून से जुम्मन चूहडे के यहाँ बारात में आया है,तो चूहड़ा (भंगी) ही होगा। कमल को चाय देने से मना कर देता है। यहाँ उसे जिस अपमानजनक स्थिति से गुजरना पड़ता है,उसे चाय वाले और कमल के संवादों के माध्यम से आप भली भाँति समझ सकते हैं- 'यहाँ चूहड़े चमारों को मेरी दुकान पर चाय ना मिलती...कहीं और जाके पियो।' तो कमल उससे उसकी जाति पूछ लेता है। इस पर चाय वाले के संवाद देखिए- 'चायवाला भभक पड़ा-'मेरी जात से तुझे क्या लेणा देणा। इब चूहड़े चमार भी जात पूछने लगे कलजुग आ गया है, सिर्फ तुम्हारे लिए,तुम अपनी जात नहीं बताना चाहते हो, तो सुनो-मेरा नाम कमल उपाध्याय है। उपाध्याय का मतलव तो जानते ही होंगे, या समझाऊं...उपाध्याय यानी ब्राह्मण।' 'कमल ने आँखें तरेर कर कहा।'

'चूहड़ो की बारात में बामन ? चायवाला कर्कशता के साथ हंसा।'

'सहर में चूतिया बणाना....मैं तो आदमी को देखते ही पिछाण (पहचान) लूं कि किस जात का है।' चायवाले ने शेखी बयावी।

जब ये संवाद चल रहा होता है, तभी वहां पर बल्लू रांयड़ (रजपूत) का रामपाल भी आता है और कमल को गाली गलौज करने लगता है -'ओ। सहरी हम तेरे भाई हैं? साले जिबान सिंभाल के बोल गांड में डंडा डाल के उलट दूंगा। जाके जुम्मन चूहड़े से रिश्ता बणा। इतनी जोरदार लौंडिया लेके जा रे है सहर वाले,जुम्मन के सींग लिकड़ आए हैं। अरे लौंडिया को

Scanned with CamScanner

किसी गांव में ब्याह देता तो म्हारे जैसों का भी भला हो जाता.....।' एक तीखी हंसी का फब्वारा फूटा। आसपास खड़े लोगों ने उसकी हंसी में अपनी हंसी मिला दी।

कमल को लगा कि जैसे अपमान का घना बियाबान जंगल उग आया है। उसका रोम रोम कांपने लगा। (पृ. १२-१३) भारतीय गांव में जहाँ भंगी चमार की बेटी को भी सारे गांव की बेटी समझने का ढाल पीटा जाता है। सच्चाई को यह कथन पूरी तरह बेनकाब कर देता है। आगे इस कहानी की परिणति विद्रोह में होती है। जब कथानायक हरीश 'सलाम' के लिए जाने से मना कर देता है- वह कहता है-'मैं इस रिवाज को आत्मविश्वास तोड़ने की साजिश मानता हूँ। यह सलाम की रस्म बंद होनी चाहिए।' कुल मिलाकर यह कहानी अपने 'ट्रीटमेन्ट' और उद्देश्यों में एक अच्छी और सुगठित कहानी है।

संकलन की पहली कहानी 'सलाम' है जिसके आधार पर ही संकलन का नामकरण भी हुआ है। सवर्णों के गाँव में पहुँची दलितों (भंगी जाति) की एक बारात के निहायत स्वाभाविक और यथार्थ वातावरण में सवर्ण मानस्किता के टुच्चेपन को प्रसंगतः उभारते हुए इस कहानी में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने मुख्यतः यह दिखाना चाहा है कि समय के बदले हुए संदर्भ में नई पीढ़ी के शिक्षित और प्रबुद्ध नवयुवक किस प्रकार अपने बीच सदियों से चली आ रही रूढ़ प्रथाओं के न केवल खिलाफ हैं, अपने इन संकल्पों की खातिर जोखिम उठाने को भी तैयार हैं। कहानी का मुख्य पात्र हरीश बड़े बुजुर्गों की नसीहत, आसन्न विपत्ति की संभावनाओं और दुष्परिणामों के बावजूद विवाह के अवसर पर सवर्णों के घर जाकर सलामी देने और बख्शीश पाने की सदियों से चली आ रही प्रथा की खिलाफत करता है और अंत तक

Scanned with CamScanner

अपने निर्णय पर दृढ़ रहता है। दलितों की अपनी अस्मिता और स्वाभिमान के इस प्रकरण को साथ ही नई पीढ़ी के चेतनागत इस बदलाव को बिना किसी आरोपण के, बड़े सहज ढंग से स्थितियों के बीच से इस तरह उजागर किया गया है कि कहानी पूरी तरह से संवेद्य बन सकी है। गंवई गाँव के दकियानूसी परिवेश में, सवर्ण मानसिकता की टुच्ची अभिव्यक्तियों के बीच ओमप्रकाश वाल्मीकि वस्तुगत यथार्थ की संगति में जिन रचनात्मक कौशल के साथ कहानी को इस बिन्दु तक लाए हैं, वह उनके कहानीकार की ताकत और समझ का साक्ष्य है। वस्तुतः कहानी को इसी बिन्दु पर समाप्त हो जाना चाहिए था। परंतु वह इसी बिन्दु पर एक अप्रत्याशित मोड़ लेती है और एक तरह के 'एण्टी-क्लाईमेक्स' को रचते हुए दलित जीवन संदर्भों का अतिक्रमण करते हुए आदमियत के एक बड़े दायरे में पहुँचकर हमारी समूची आज की मानसिकता पर हमारी आदमियत पर सवाल उठाती है। क्या हो गया है हमारी सोच को, कौन सा ग्रहण लग गया है उस पर कि हम आदमी को आदमी के रूप में न देखकर उसे छूत-अछूत, हिन्दू-मुसलमान, ब्राह्मण-ठाकुर न जाने किन-किन रूपों में देखते और पहचानते हैं और यही संस्कार और सोच जन्म से ही अपनी संतानों को भी देते हैं। वर्ग, वर्ण, धर्म, नस्ल संप्रदाय से परे आदमी केवल आदमी, हमें क्यों नहीं दिखाई देता ? कहानी का यह अप्रत्याशित नया विधान उसे एक बड़े सवाल से, आदमियत की शिनाख्त के सवाल से जोड़ते हुए न केवल उसे एक नई अर्थवत्ता और बड़ा आशय देता है, ओमप्रकाश वाल्मीकि की अपनी सोच के एक खूबसूरत पहलू से भी हमें मुखातिब करता है।

दृष्टव्य है कि जिस वर-वधू पक्ष इस चिन्ता में है कि जल्द से जल्द बारात विदा होकर गाँव की सीमा से बाहर हो जाय, बारात के एक बुजुर्ग

Scanned with CamScanner

अपने बच्चे से शीघ्र खाना खाने का आग्रह करते हैं और मासूम सा वह बच्चा हठपूर्वक खाने से यह कहते हुए इंकार करता है कि वह मुसलमान के हाथ से बनाई रोटी नहीं खाएगा। यह समझाने के बावजूद कि रोटी हिन्दू की बनाई हुई है, वह बराबर अपनी जिद पर अड़ा रहता है- 'मैं नी खाऊँगा उसके हाथ की बनी रोटी।' ओमप्रकाश वाल्मीकि ने कहानी इसी बिन्दु पर यह कहते हुए खत्म की है कि 'कमल और हरीश फटी फटी आँखों से उस लड़के को देख रहे थे। कुछ देर पहले जगा आत्मविश्वास लड़के की आवाज में दबने लगा था। कमल और हरीश दोनों खामोशी के अंधेरे जंगल में भटक गए थे।' कहानी की व्यंजना यही है कि आदमियत की सही मंजिल तक की यात्रा सचमुच कितनी कठिन है। न जाने कितने अवरोध हैं जिन्हें पार करना होगा। सदियों के संस्कार,सदियों की रूढ़ सोच, इन सबका गलना , टूटना बड़े धैर्य, संयम और कठिन संकल्प की अपेक्षा रखता है। कहानी का यह अंत हताशा या निराशा का सूचक नहीं, एक बेचैनी जरूर उपजाता है, संजीदगी के साथ संघर्ष को जारी रखने की जरूरत पर बल देता है।

कमल ने ब्राह्मण होकर भी हरीश से बचपन की उम्र से अपनी दोस्ती निबाही थी, अपने घर परिवार के विरोध के बावजूद। हरीश ने भी उसके साथ भाईचारा जोड़ा था। एक अप्रत्याशित प्रसंग दोनों के उपजे आत्म-विश्वास की लौ को कंपा देता है और वास्तविकता का एक नया पहलू उनके सामने चुनौती के रूप में पेश कर देता है। कहानी इसी नाते इकहरी बुनावट की नहीं, संश्लिष्ट बुनावट वाली बन गई है - एक महत्वपूर्ण कहानी का दर्जा पा सकी है।

चौदह कहानियों के इस संग्रह में दलित जीवन के सुख, दुःख, कुंठा और नैराश्य ही नहीं, उनका संघर्ष भी है, ये कहानियाँ इसलिए भी पठनीय

Scanned with CamScanner

और उल्लेखनीय हैं क्योंकि इनमें दलित जीवन की दारूण स्थितियाँ को लेकर कोई भावुक विलाप नहीं है, साथ ही जीवन की त्रासदियाँ और दुःखों के अनुभव की स्मृतियों के लौटने पर कोई प्रतिकार के आवेश से भाषा का उग्र प्रदर्शन नहीं है, आवेश और प्रतिकार की ध्वन्यात्मक स्थितियाँ हैं जो कथा के साथ शिल्प की बुनावट में आयी हैं, लेखकीय हस्तक्षेप की भाँति नहीं है, कहानियों में यथार्थ जिस तरह से है, वह घटनाओं के ब्यौरों में नहीं है, कहानियों के ट्रीटमेन्ट में संवेदना की एक ऐसी धारा है जो पाठक के अन्तर्मन को छूकर निकलती है लेकिन पात्रों को गैर जरूरी तरलता से बचाती है।

सलाम कहानी का हरीश विवाह के बाद सवर्णों के घर जाकर सलामी देने और बख्शीश पाने की पुरानी प्रथा का विरोध करता है। हरीश पढ़ा-लिखा युवा है। लेकिन यह विरोध महज एक शिक्षित युवा का निजी विरोध भर नहीं है, यह एक समूची पीढ़ी का कु-प्रथा के खिलाफ आक्रोश है - इस आक्रोश और विरोध में निश्चय और निर्णयों के परिणाम और जोखिम की पहचान और समझ भी है। सवर्ण को प्रथा के टूटने के साथ वर्चस्व के खत्म होने का भय है- दलितों का रूढ़िग्रस्त समाज और उनके पूर्वाग्रह हैं इन सबके बीच स्थितियों के परिवर्तन के लिए, दलित नायक का संघर्ष है, कहानी का निर्णायक मोड़ पर बल्कि अन्त के करीब पहुँचकर लेखक कहानी को ऐसे हतप्रभ कर देने वाले मोड़ पर खड़ा करता है जहाँ अब जाति और धर्म के नये समीकरण और सवाल खड़े हो जाते हैं।

बारात में खाना खाने से एक बालक इसलिए इनकार कर देता है कि खाना मुसलमान ने बनाया है। यह कहानी इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि यह महज दलित या जाति प्रश्न से उठकर मनुष्यता के सवाल पर ठहर जाती है। हर जाति और वर्ग के पास अपने रूढ़ सोच हैं जो अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित होते हैं, इसलिए लड़ाई सिर्फ इकतरफा नहीं है, लड़ाई सिर्फ

Scanned with CamScanner

जातियों या धर्म के बीच ही नहीं है, वह एक-दूसरे के भीतर बैठे सोच के साथ भी है, मानसिकता के साथ भी है जो समूची मनुष्यता की पहचान से नत्थी है और यही संघर्ष सबसे कठिन है, ओमप्रकाश वाल्मीकि बहुत ही सहजता से कहानी में एक ऐसा बड़ा प्रश्न खड़ा करते हैं, जो नैराश्य में धकेलने की अपेक्षा संकल्प की तरफ ले जाता है।

'सपना' कहानी हिन्दू धर्म की बहुदेववादी आस्थाओं की व्यंग्यात्मक प्रस्तुति के साथ दलितों के प्रति सवर्णों के भेदभाव को भी एक विशिष्ट संदर्भ में उजागर करती है। यहाँ भी दलितों के साथ किए जा रहे भेदभाव का प्रतिवाद एक सवर्ण ब्राह्मण ऋषिराज के द्वारा होता है जो आवेश में अति नाटकीय तरीके से मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के लिए हो रहे सारे समारोह को अस्तव्यस्त कर देता है। कहानी में ऋषि के व्यवहार की यह अतिनाटकीयता, प्रसंगगर्भित भले हो, कहानी को कमजोर करती है।

'सपना' कहानी 'सलाम' की तरह डेंस (गहराई) नहीं है, हिन्दुओं में प्रचलित 'अपने लोग अपने भगवान' वाले सोच को व्यंग्य के जरिये प्रस्तु किया गया है। इसमें दलितों के उपेक्षा एवं परहेज को भी उजागर किया गया है। इस परहेज और भेदभाव का विरोध एक सवर्ण द्वारा ही होता है,कहानी में थोड़ा नाटकीय तत्व आ गया है जिसने कहानी में यथार्थ की स्वाभाविक लय के साथ छेड़छाड़ की।

'सपना' में कथा चरित्रों की वर्णीय विशेषताएँ पूरी तरह उभरकर सामने आती हैं। जैसे कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर शिरोडकर साहब विद्यालय और महाविद्यालय के प्रस्ताव को नकार कर कारखाने के प्रांगण में मंदिर बनवाने का निर्णय देते हैं। इसका सीधा सा अर्थ है कि ब्राह्मण सदैव से ही 'तमसौ मा ज्योर्तिगमय' का नारा लगाते हुए भी हिन्दू समाज में अंधविश्वास का

Scanned with CamScanner

अंधेरा फैलाने का ही प्रयत्न करता रहा है । दूसरे जब मंदिर निर्माण का निर्णय हो जाता है तो समिति में इस बात पर लड़ाई होती है कि मंदिर किस भगवान का बने । भगवानों में चाहे लड़ाई हो या नहीं लेकिन उनके नाम पर लड़ाई भारतीय संस्कृति है । सबसे अधिक मेहनत गौतम करता है, जो एस.सी. है । लेकिन जब उनकी मेहनत के परिणाम स्वरूप मंदिर बनकर तैयार हो जाता है । उसमें मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा का समारोह आयोजित किया जाता हे । तो गौतम की पत्नी तथा बच्चों को पांडल में आगे बैठा देखकर नटराजन की प्रतिक्रिया देखिए-

'ये गौतम एस.सी. है । नटराजन ने आखिरी चाल चल दी ।'

'तो इससे क्या फर्क पड़ता है.....श्री नटराजन जी....।' ऋषि ने व्यंग्य से कहा ।

'फर्क पड़ता है.....पूजा अनुष्ठानों में उन्हें आगे नहीं बैठाया जा सकता । यह रीत है शास्त्रों की मान्यता है ।' नटराजन ने गहरे अवसाद में भर कर कहा । (पृ.२९)

गौतम के परिवार को आगे से उठाकर पीछे बैठाने की कशमकश में झगड़ा शुरू हो जाता है और अंततः प्राणप्रतिष्ठा का कार्यक्रम कुरूक्षेत्र का मैदान बन जाता है । इस पर गौतम का यह निष्कष कि 'चलो भाई हम लोग घर चलते हैं । ऐसे अनुष्ठानों में बैठकर क्या होगा । जहाँ आदमी को आदमी की तरह न समझा जाए ।' हिन्दू धर्म के पाखंड को पूरी तरह व्यक्त कर देता है और उससे दलितों को मुक्ति पाने का संदेश भी बहुत स्पष्ट तरीके से देता है ।

'बैल की खाल' कहानी मरे हुए जानवरों की खाल उतारने का पेशा करने वाले दो दलित चरित्र, काले और भूरे की मानवीयता की पक्षधरता की

Scanned with CamScanner

है, भूख की तकलीफ के बीच इन दोनों को पंडितजी के बैल की मौत की खबर भी राहत देती है, बैल की खाल उतारकर शहर में बेचने जाने के लिए वे दोनों गांव की सड़क पर किनारे बैठे हैं, इसी समय सहसा जानवरों के झुंड से पृथक होकर भाग रही बछड़ी ट्रक की चपेट में आकर घायल होकर सड़क पर छटपटाने लगती है, काले और भूरा का मानवीय पक्ष यहीं स्पष्ट होता है जब वे उस घायल बछड़ी को बचाने के लिये भाग-दौड़ करते हैं- ट्रक ड्रायबर को मारने के लिए दौड़ते हैं, गाँव में डॉक्टर को बुलाने जाते हैं- कुछ देर पहले बैल की खाल उतारकर लाये वे दोनों बछड़ी को बचाने के लिये बहुत करुणा से भर जाते हैं,मरे हुए जानवर की खाल उतारना उनका पेशा है लेकिन मरते हुए जानवर को बचाना उनकी मानवीयता का हिस्सा है। अमानवीयता इसी के सापेक्ष प्रकट होती है जब सभ्य समाज का लाला गाँव के जानवरों की खाल के लिए जानवरों को मारने के लिए इन दोनों अछूत एवं अपवित्र समझे जाने वाले मजदूरों को जहर की पुड़िया देने की बात करता है तथाकथित सभ्य संसार का टुच्चापन और नीच और दलित की मानवीयता को वस्तुगत यथार्थ के साथ यह कहानी प्रकट करती है।

'बैल की खाल' कहानी मरे हुए जानवरों की खाल निकालने वाले काले और भूरे, दो व्यक्तियों के चरित्र के मानवीय पहलू को उजागर करने वाली कहानी है साथ ही उन तमाम लोगों की सोच और मानसिकता पर एक करारा व्यंग्य भी है। जिनके लिए वे समाज के सबसे अधम, उपेक्षित और अपवित्र प्राणी हैं। भूख के लंबे दौर झेलने के क्रम में उन्हें पं. बिरज मोहन के मरे बैल की सूचना शुभ संवाद की तरह मिलती है। उसकी खाल उतारकर वे शहर के बाजार में व्यापार को देने के लिए बस या किसी वाहन की जुगाड़ में सड़क पर बैठे हैं। उन्हें भय है कि ज्यादा समय बीतने पर यदि खाल

Scanned with CamScanner